"सा कला या विमुक्तये"

संस्कार भारती

कला एवं साहित्य की अखिल भारतीय संस्था

अखिल भारतीय साधारण सभा

कालावधिः

युगाब्द 5127, मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी-पंचमी, शनिवार-रविवार

8 एवं 9 नवम्बर 2025

स्मृति मन्दिर परिसर, रेशीमबाग, नागपुर

अ.भा. महामंत्री श्री अश्विन महेश दलवी द्वारा प्रस्तुत

वार्षिक प्रतिवेदन

2024-25

महामंत्री प्रतिवेदन

आदरणीय श्री अध्यक्ष महोदय, माननीय श्री संपर्क अधिकारी, सभी माननीय अखिल भारतीय पदाधिकारीगण, सभी माननीय विशेष आमंत्रित गण तथा संस्कार भारती की अ.भा. साधारण सभा के समस्त गणमान्य सदस्य – आप सभी का पूज्य भूमि नागपुर के रेशिमबाग प्रांगण में आयोजित युगाब्द 5127 की अखिल भारतीय साधारण सभा में हार्दिक स्वागत एवं अभिवादन है। आशा है कि सभी के पूर्ण सहयोग एवं सहभाग के साथ प्रसन्न वातावरण में हम अपनी यह बैठक सम्पन्न करेंगे।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हम इस वर्ष की साधारण सभा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक परम पूजनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि नागपुर में कर रहे हैं। 1925 में डॉ. जी द्वारा व्यक्ति-निर्माण एवं संगठित हिन्दू समाज के उद्देश्य से रोपा गया वह बीज आज वटवृक्ष के रूप में अपना शताब्दी वर्ष पूर्ण कर रहा है। यह अत्यंत गौरवपूर्ण एवं सुखद है कि इस वर्ष की साधारण सभा इसी प्रांगण में सम्पन्न हो रही है, जो इस संगठन की धुरी है। संघ शताब्दी के अवसर पर हम संघ संस्थापक परम पूजनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी को स्मरण करते हुए उन्हें नमन करते हैं और उन्हें श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं। उनका आशीर्वाद और प्रेरणा हम सभी का मार्ग प्रशस्त करेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

पिछले एक वर्ष में राष्ट्र–जीवन, समाज तथा अपने संगठन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले जिन महानुभावों का किन्हीं कारणों से देहावसान हुआ है, हम उनकी पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पिछले एक वर्ष में देशभर में अपनी गतिविधियों का लेखा–जोखा आप सभी के सम्मुख प्रतिवेदन के रूप में रखूँगा। ऐसा प्रतीत हुआ है कि संगठन में आवश्यक अद्यतीकरण की प्रक्रिया में सफलता पाते हुए, अर्थात जिन पुण्यात्माओं ने जिस उद्देश्य से संस्कार भारती की स्थापना की, उन्हीं के पुनीत कार्य को आगे बढ़ाते हुए हम संस्कार भारती के संगठनात्मक कार्य, कार्यक्रम, उपक्रम, प्रकल्प इत्यादि विभिन्न आयामों को गति देने में सफल हुए हैं। इनमें से प्रगति की कुछ बातों का उल्लेख इस प्रतिवेदन में करने का प्रयास किया है।

महाकुम्भ-2025

संस्कार भारती द्वारा प्रयागराज महाकुंभ में 18 जनवरी 2025 से 10 फरवरी 2025 तक आयोजन हुआ। इस कालखंड में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देशभर के प्रमुख कलासाधकों, विद्वानों, रंगकर्मियों, गायकों, नृत्यांगनाओं एवं सांस्कृतिक प्रेमियों ने भाग लिया। लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की 300 वीं जन्मशती के अवसर का स्मरण करते हुए, सेक्टर 10, बजरंगदास मार्ग स्थित इस शिविर परिसर का नामकरण ''महेश्वर परिसर'' रखा गया। इसी के साथ विभिन्न आयोजनों में रानी दुर्गावती और संत मीराबाई की 500 वीं तथा 525 वीं जयंती के निमित्त उन्हें स्मरण किया गया।

आयोजित मुख्य कार्यक्रम

वीर मीरा भजन कार्यक्रम – यह कार्यक्रम भक्ति और वीर रस का संगम बना। मीराबाई के भजन प्रायः भक्तिरस में गाए जाते हैं, लेकिन इस विशेष कार्यक्रम में मीरा के साहसिक पक्ष को उकेरा गया। भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध गायिका सुमित्रा गुहा (पद्मश्री) ने अपनी अनूठी शैली में मीरा के उन भजनों की प्रस्तुति दी, जिनमें वीरता, संकल्प और संघर्ष की भावना प्रमुख थी।

पुण्यश्लोक लोकमाता एवं रानी दुर्गावती नाटकों का मंचन

''पुण्यश्लोक लोकमाता''- इस नाटक का मंचन मुंबई की 'काव्यशैली क्रिएशन्स' द्वारा किया गया। वर्तमान युवा पीढ़ी को ध्यान में रखकर इस नाटक के माध्यम से अहिल्याबाई के व्यक्तित्व का प्रेरणादायक परिचय कराया गया।

''दुर्गावती'' - जबलपुर की नाट्य संस्था ने भारतीय इतिहास की वीरांगना, रानी दुर्गावती के शौर्य, बलिदान और अदम्य साहस पर आधारित नाटक का मंचन किया।

सैंड आर्ट

प्रयागराज विश्वविद्यालय के डॉ. सचिन सैनी के संयोजन में युवा कलाकारों द्वारा पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के मंदिर पुनर्निर्माण द्वारा सांस्कृतिक पुनरुत्थान के कार्य को दर्शाती हुई सैंड आर्ट बनाई गई, जिसका उद्घाटन केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी ने किया।

राष्ट्र रत्ना शोभायात्रा

22 जनवरी 2025 को भारत के निर्माण में योगदान देनेवाली वीरांगनाओं की ''राष्ट्र रत्ना शोभायात्रा'' के माध्यम से महाकुम्भ में भारत की नारी शक्ति का गौरव अनूठे पद्धति से किया गया। इस कार्यक्रम में भारत के राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आध्यात्मिक क्षेत्रों में अपने शौर्य और मेधा का प्रदर्शन करने वाली नारी-शक्ति को पुनर्जागरण का संदेश देने वाली योगदात्रियों जैसे सावित्रीबाई फुले, महारानी लक्ष्मीबाई, रानी चेन्नम्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, लता मंगेशकर, महादेवी वर्मा, कल्पना चावला,

गौरा देवी, तीलू रौतेली, भगिनी निवेदिता, महारानी जीजामाता आदि सहित पूरे देश की सभी प्रान्तों से आयी लगभग 200 बहनों ने इन दिव्य स्वरूपों की भव्य शोभायात्रा निकालकर उन्हें श्रद्धादर समर्पित करते हुए वर्तमान पीढ़ियों को राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक नवजागरण का सन्देश दिया। इस शोभायात्रा का नेतृत्व लोकमाता अहिल्यादेवी, रानी दुर्गावती और संत मीराबाई की वेश-भूषा में सम्मिलित कार्यकर्ता बहनों ने किया ।इस शोभायात्रा में 16 राज्यों के 21 प्रांतों से 200 से अधिक महिलाओं ने ऐतिहासिक वीरांगनाओं की वेश-भूषा में भाग लिया । इसमें कार्यकर्ता बहनों ने विशेष वेश-भूषा परिधान कर 107 वीरांगना, समाज सुधारक, संतों का परिचय कराया।

''राष्ट्र रत्ना शोभायात्रा'' का शुभारंभ एवं उद्घाटन केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी द्वारा भगवा ध्वज दिखाकर किया गया। संस्कार भारती की अखिल भारतीय उपाध्यक्ष डॉ. हेमलता एस. मोहन, संगठन मंत्री श्री अभिजीत गोखले, मातृशक्ति संयोजिका श्रीमती अनीता करकरे, सह मातृशक्ति संयोजिका श्रीमती मिथिलेश तिवारी, मंचीय कला संयोजक श्री देवेन्द्र रावत एवं अन्य अखिल भारतीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी गरिमामयी बनाया।

यह शोभायात्रा महेश्वर परिसर से गंगा तट तक निकाली गई ।गंगा आरती और वन्दे मातरम् के साथ शोभायात्रा का समापन हुआ ।इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के सभी प्रान्तों से विभिन्न कला प्रस्तुतिओं का तथा चित्र प्रदर्शनियों का आयोजन हुआ ।

पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी वर्ष

यह वर्ष पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर का त्रिशताब्दी वर्ष रहा। संस्कार भारती ने इस वर्ष पूरे भारत में विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रम व उपक्रम आयोजित किये गए जिनमे संगोष्ठी, व्याख्यान, सांगीतिक प्रस्तुतियाँ, नाट्य प्रस्तुतियां, शोभायात्रा, कीर्तन, प्रदर्शनियाँ, कवी सम्मलेन, स्मारिका विमोचन व कुछ विशेष कार्यक्रम प्रमुख थे। इन आयोजनों का उद्देश्य अहिल्याबाई होलकर के व्यक्तित्व, कृतित्व, जीवन, आदर्शों, प्रशासनिक दक्षता, सामाजिक योगदान तथा सांस्कृतिक संरक्षण के कार्यों को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाना था।

संगोष्ठी / व्याख्यान / निबंध एवं वक्तृत्व प्रतियोगिता

चित्तौड़ प्रान्त के उदयपुर में 23 जनवरी 2025 को "भारतीय सांस्कृतिक एवं नारी सशक्तिकरण", विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस पहल में उनके जीवन चरित्र को आम जनमानस तक पहुँचाने हेतु एक फ्लेक्स का निर्माण किया गया, जिसमें उनके चित्र के साथ उनकी संक्षिप्त जीवनी भी दर्शाई गई थी । इस अभियान का अवलोकन लगभग 5000 व्यक्तियों ने किया, जिनमें 3000 बंधु एवं 2000 मातृशक्ति थीं।

काशी प्रान्त के प्रयागराज में 25 सितम्बर 2024 को इलाहाबाद डिग्री कॉलेज में विचारोत्तेजक व्याख्यान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मालवा प्रान्त में 21 मई 2025 को व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

देवगिरी प्रान्त में 20 जुलाई 2024 को विविध सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । श्रृंखला में विशेष रूप से विद्यार्थियों को जोड़ने के उद्देश्य से निबंध लेखन और वक्तृत्व स्पर्धाएँ आयोजित की गईं, जिनमें शालेय एवं महाविद्यालयीन स्तर पर कुल 1145 विद्यार्थी कलाकारों ने सहभागिता की । निबंध एवं वक्तृत्व स्पर्धाओं में शालेय निबंध गट में 1065 विद्यार्थियों ने भाग लिया । लगभग 16 स्थानों पर अहिल्याबाई होलकर के

जीवन और योगदान पर आधारित व्याख्यान तथा कीर्तन कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

विदर्भ प्रान्त में 13 जनवरी 2025 को चंद्रपूर में ''अहिल्याबाई का जीवन और सामाजिक कार्य'' विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने स्वयं इतिहास पढ़कर मौलिक भाषण प्रस्तुत किए। 21 जनवरी 2025 को नागपूर में ''स्टोरी मेकिंग स्पर्धा'' का आयोजन हुआ । इसमें 70 विद्यालयों के 523 छात्रों ने भाग लिया । अमरावती के अचलपूर में 10 मार्च 2025 को महिला दिवस के उपलक्ष्य में ''जागर स्त्रीशक्तीचा'' कार्यक्रम में प्रा. विद्या मुहेकर द्वारा व्याख्यान हुआ, जिसमें पुण्यश्लोक अहिल्याबाई के चरित्र को केंद्र में रखते हुए समाज की कर्तृत्ववान महिलाओं का सार्वजनिक सत्कार किया गया ।

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत में दिसंबर 2024 से मई 2025 तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में महाराष्ट्र एजुकेशन सोसायटी, सीनियर कॉलेज पुणे के संयुक्त तत्वावधान में पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विविध रचनात्मक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसकी शुरुआत प्रांत स्तरीय वक्तृत्व स्पर्धा से हुई।

25 जनवरी को पुणे में ''अहिल्याबाई का जीवन और वक्तृत्व'' विषय पर श्री योगेश सोमण द्वारा विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमे डॉ. देगलूरकर का प्रेरक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

दक्षिण बंगाल प्रांत में वर्षभर विभिन्न सेमिनार, चर्चाएँ आयोजित की गई, जिनमें विद्यार्थियों, महिला संगठनों, इतिहासकारों एवं समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने रानी अहिल्याबाई के जीवन के बारे में, उनके सुशासन, सामाजिक सुधारों, आध्यात्मिक साधना के विचारों तथा हिंदू धर्म के उत्थान के लिए उनके अथक प्रयासों पर चर्चा की । 08 मार्च 2025 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, महिला संगठन ''बंग नारी शक्ति'' के सहयोग से कोलकाता के ईस्टर्न ज़ोनल कल्चरल सेंटर में व्याख्यान, विचार-विमर्श, कला प्रदर्शनियाँ, निबंध लेखन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

नाट्य प्रस्तुतियां

जोधपुर प्रान्त के जालौर में 06 अप्रैल 2025 को ''पुण्यश्लोक अहिल्या'' नामक नाट्य प्रस्तुति का आयोजन किया गया ।

जयपुर प्रान्त के जयपुर महानगर में 18 अक्टूबर 2024 को अखिल भारतीय साधारण सभा में तथा धौलपुर में 18 अप्रैल 2025 को पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर के जीवन पर आधारित नाट्य का मंचन हुआ ।

कोकण प्रान्त में 14 दिसंबर 2024 को एक विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के जीवन एवं कार्य पर आधारित नाट्य प्रस्तुति का आयोजन किया गया ।

काशी प्रान्त के काशी महानगर में 18 दिसंबर 2024 को ''पुण्यश्लोका अहिल्याबाई'' पर आधारित एक प्रेरणादायक नाट्य मंचन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, वाराणसी के सभागार में संपन्न हुआ ।यह मंचन ''नाद यात्रा''के अवसर पर आयोजित किया गया।

विदर्भ प्रांत के अकोला महानगर में नवंबर 2024 में 14 विद्यालयों में ''पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर का कार्य कर्तृत्व''विषय पर निबंध एवं नाट्य स्पर्धा आयोजित की गई, जिसमें 700 विद्यार्थियों ने भाग लिया। यवतमाल में 16 फरवरी 2025 को भरतमुनि जयंती कार्यक्रम के अंतर्गत ''मी अहिल्याबाई बोलतेय''एकपात्री प्रयोग का आयोजन बाबाजी दाते कला वाणिज्य महाविद्यालय के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। अचलपुर में दिसंबर 2024 को सिटी हाई स्कूल के वार्षिक कार्यक्रम में सौ. कल्पना गारकडे ने अहिल्याबाई के वेश में एकपात्री अभिनय प्रस्तुत किया।

छत्तीसगढ़ प्रान्त के रायपुर में 17 से 19 मई 2024 तक आयोजित त्रिदिवसीय ''रंग संस्कार महोत्सव''में लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित मराठी नाटक ''मी अहिल्या बोलतेय''का मंचन किया गया। 07-08 जून को दुर्ग में अहिल्याबाई त्रिशताब्दी जयंती समारोह का समापन हुआ। 07 जून को दुर्ग इकाई द्वारा नाट्य प्रस्तुति एवं 08 जून को महाराष्ट्र मंडळ रायपुर द्वारा लघु नाट्य और भरथरी शैली में ''अहिल्या गाथा'' की प्रस्तुति की गई ।

दक्षिण बंगाल प्रांत में अहिल्याबाई के जीवन के महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय घटनाओं के आधार पर नॉर्थ 24 परगना जिला के रंगमंच समूह ने नाटक तैयार किया, जिसका प्रदर्शन विभिन्न मंचों पर किया गया।

विशेष आयोजन / महोत्सव / शोभायात्रा / कीर्तन / धरोहर यात्रा / कवी सम्मलेन

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत में 6 से 10 फरवरी तक "इंदौर–महेश्वर धरोहर यात्रा" का आयोजन हुआ। 8 फरवरी को इंदौर के राजवाड़ा और 9 फरवरी को महेश्वर घाट पर विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ हुईं, जिनमें 85 कलाकारों ने नृत्य, नाट्य, चित्र, रांगोली, संगीत, पोवाडा आदि कलाओं की मनोहारी झलक प्रस्तुत की। प्रांत के फेसबुक पेज 'कलामंथन' पर अहिल्याबाई के जीवन पर आधारित 165 लेखों की लेखमाला प्रकाशित की गई। इसके साथ ही "देवी" नामक एकल नाट्य का लेखन और निर्देशन, श्री योगेश सोमण द्वारा किया गया, जिसका मंचन रश्मी देव जी ने किया। 29 से 31 मई तक नाशिक में शोभायात्रा, व्याख्यान, चित्र प्रदर्शनी, ऐतिहासिक वस्तुओं की प्रदर्शनी और नाटकों सहित विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर अहिल्यानगर समिति द्वारा चौंडी स्थित अहिल्याबाई स्मारक स्थल पर श्रद्धांजलि स्वरूप सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

उत्तर कर्नाटक प्रान्त के गोकर्ण में शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर द्वारा निर्मित धर्मशाला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का भावपूर्ण स्मरण किया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय प्रांत दृश्यकला प्रमुख श्री रवि गुणगा ने किया। आयोजन राष्ट्र सेविका समिति के सहयोग से सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग 400 कार्यकर्ताओं ने सक्रिय सहभागिता की।

विदर्भ प्रांत में दुर्गा नवरात्रि के पावन अवसर पर 07 से 15 अक्तूबर 2024 के मध्य मातृशक्ति तथा लोककला विधा द्वारा एक ऑनलाइन कीर्तन जागरण का आयोजन किया गया। प्रांत के विभिन्न नगरों से 9 कीर्तन कलासाधकों ने सहभागिता करते हुए कर्तृत्वशालिनी तथा रणरागिणी महान स्त्रियों के चरित्र का गान प्रस्तुत किया। इन प्रेरणादायक चरित्रों में अहिल्याबाई होलकर, आदि व्यक्तित्वों के जीवन कार्यों को भावपूर्ण कीर्तन शैली में प्रस्तुत किया गया।

अवध प्रांत के लखनऊ महानगर में संत गाडगे प्रेक्षागृह, गोमती नगर, लखनऊ में अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्मशताब्दी के अवसर पर सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया।

दक्षिण बंगाल प्रांत द्वारा अहिल्याबाई होलकर के जीवन पर आधारित एक वृत्तचित्र का निर्माण किया गया। यह वृत्तचित्र सोशल मीडिया और यूट्यूब पर प्रसारित भी किया गया।

गोरक्ष प्रांत में 26 जनवरी 2025 को बस्ती इकाई द्वारा लोकमाता अहिल्याबाई होलकर जन्म त्रिशताब्दी समारोह के कार्यक्रम में कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें अनेक प्रतिष्ठित कवियों ने सहभागिता की और राष्ट्रभक्ति, संस्कृति, मातृशक्ति और लोकमाता अहिल्याबाई विषयों

पर काव्य पाठ किया।

कानपुर प्रांत के प्रान्तीय कलासाधक संगम में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन फर्रुखाबाद में किया गया। यह तीन दिवसीय आयोजन विविध कला विधाओं के साधकों एवं विद्वानों का साक्षात्कार स्थल बना, जहाँ लोककला, साहित्य और चित्रकला से जुड़े कलासाधक उपस्थित रहे। राष्ट्रीय संगोष्ठी, चित्रकला शिविर, धरोहर कला प्रदर्शनी, कवि सम्मेलन एवं लोककला व मंचीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें लोकमाता अहिल्याबाई के जीवन मूल्यों और उनके आदर्शों को वर्तमान पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत किया।

चित्रकला प्रदर्शनी एवं कार्यशाला

छत्तीसगढ़ प्रांत में त्रिशताब्दी वर्ष के शुभारंभ पर 31 मई 2024 को रायपुर में नर्सरी से लेकर महाविद्यालय स्तर तक के लगभग 120 कलासाधकों ने चित्र रंगोत्सव के उपक्रम में अहिल्याबाई के चित्रों पर रंग भर कर उन्हें जीवंत किया। 18-20 अप्रैल 2025 तक रायपुर में आयोजित चित्र कार्यशाला में अहिल्याबाई के जीवन प्रसंगों को चित्रों के माध्यम से दर्शाने हेतु प्रांतीय महामंत्री श्री हेमन्त माहुलीकर एवं वरिष्ठ चित्रकार श्री दिलीप पत्रिकर ने संयुक्तरूप से 55 प्रसंगों की रूपरेखा बनाई। दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर के सहयोग से आयोजित कार्यशाला में 45 चित्रकारों ने भाग लिया और 51 चित्रों की एक चित्रमाला तैयार की गई।इस चित्रमाला का प्रदर्शन, 20-22 मई को रायगढ़, 24-25 मई को बिलासपुर, 27 मई से 02 जून को कोरबा आदि विभिन्न शहरों में किया गया। 07-08 जून को दुर्ग में अहिल्याबाई त्रिशताब्दी जयंती समारोह का समापन हुआ।

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत में 1 से 6 अप्रैल 2025 तक पुणे की राजा रविवर्मा आर्ट गैलरी में चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें संगोष्ठियाँ, व्याख्यान और प्रात्यक्षिक सत्र भी सम्मिलित थे।इन कार्यक्रमों में कई प्रमुख कलाकारों और विद्वानों ने सहभागिता की।

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर जी की त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में देशभर में विविध रचनात्मक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न वर्गों और प्रान्तों से हजारों लोगों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

1. संगोष्ठियों, व्याख्यानों एवं सेमिनारों की श्रृंखला 7 प्रान्तों के 91 स्थानों पर आयोजित की गई, जिनमें विद्यार्थियों, प्रतिभागियों, दर्शकों और कलासाधकों सहित कुल 7995 से अधिक लोगों ने सक्रिय भागीदारी की। इन बौद्धिक आयोजनों के माध्यम से अहिल्याबाई के जीवन, कार्य और उनके सामाजिक दृष्टिकोण पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ।

2. नाट्य प्रस्तुतियों एवं मंचनों का आयोजन 7 प्रान्तों के 31 स्थानों पर हुआ, जिनमें रंगकर्मियों, गणमान्य व्यक्तियों, समीक्षकों, दर्शकों और छात्रों सहित लगभग 6900 लोगों ने भाग लिया। इन मंचनों ने अहिल्याबाई के अद्वितीय व्यक्तित्व और लोकसेवा को रंगमंच के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाया।

3. विशेष आयोजनों, महोत्सवों, शोभायात्राओं और कीर्तन-जागरण जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम 7 प्रान्तों में आयोजित हुए, जिनमें लगभग 2100 प्रतिभागियों ने वीरांगनाओं, समाज सुधारकों एवं संतों के वेश में विशेष परिधान धारण कर प्रेरणादायी उपस्थिति दी।

4. चित्रकला प्रदर्शनी एवं स्मारिका विमोचन के अंतर्गत 450 से अधिक चित्रकारों ने सहभागिता की, जिन्होंने विविध कलारूपों में अहिल्याबाई होलकर के जीवन दर्शन को उकेरा।

5. इसके अतिरिक्त, डॉक्युमेंट्री निर्माण और कवि सम्मेलन जैसे कार्यक्रम भी उनके जीवन के विभिन्न आयामों को सृजनात्मक तरीके से जनसामान्य के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणास्पद सिद्ध हुए।

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर जी से सम्बंधित 19 प्रान्तों के 131 स्थानों पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें दर्शक, विद्यार्थी, प्रतिभागी, रंगकर्मी, गणमान्य व्यक्ति, समीक्षक, चित्रकार एवं कलासाधक सहित विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों से लगभग 17,500 से अधिक लोगों ने सहभागिता की।

भरतमुनि सम्मान – 2024

संस्कार भारती द्वारा 'भरतमुनि सम्मान – 2024' का आयोजन 22 फरवरी 2025 को नई दिल्ली नगर पालिका कन्वेंशन सेंटर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ ।इस वार्षिक सम्मान का उद्देश्य कला और साहित्य के क्षेत्र में असाधारण योगदान देने वाले कलाकारों को सम्मानित करना है। इस वर्ष लखनऊ की प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना डॉ. कुमकुम धर को मंचीय कला के क्षेत्र में और भवानी पटना (ओड़िशा) के प्रतिष्ठित संस्कृत साहित्यकार डॉ हरेकृष्ण मेहेर को साहित्य (भारतीय भाषाएं) के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान हेतु 'भरतमुनि सम्मान – 2024' से सम्मानित किया गया ।दोनों कलाकारों की कलासाधना ने भारतीय संस्कृति और परंपरा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

मुख्य अतिथि केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने अपने करकमलों द्वारा दोनों चयनित कलाकारों को स्मृति चिह्न, सम्मान पत्र, और रू. 1,51,000/– की राशि भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य माननीय श्री सुरेश सोनी का उद्‌बोधन विशेष उल्लेखनीय रहा जिसमें उन्होंने नाट्यशास्त्र में साधना व तपस्या का महत्त्व तथा भारतीय कला ग्रंथो में भारतीय कला दृष्टी को समझने की दृष्टी दी।

कार्यक्रम के दौरान दोनों कलाकारों के जीवन और उनके योगदान पर आधारित लघु फिल्म प्रदर्शित की गई तथा कलाकारों ने भी अपने अनुभव साझा किए और इस सम्मान को अपनी कला साधना के लिए प्रेरणादायी बताया। कार्यक्रम में देशभर से आए कलाकारों, साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों और कला प्रेमियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। उल्लेखनीय है कि भरतमुनि सम्मान का शुभारंभ वर्ष 2023 में बेंगलुरु में कलासाधक संगम के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत के करकमलों से हुआ था ।

अ. भा. कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग, नासिक

संस्कार भारती की कार्य प्रणाली में सामयिक परिवर्तनों को आत्मसात करने एवम् कार्यकर्ता की समयानुकूल कार्य सिद्धता विकास की दृष्टि से त्रिस्तरीय प्रशिक्षण वर्ग संकल्पित किये गये। इनमें से प्रधान 'अखिल भारतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग' दिनांक 12 से 14 अप्रैल 2025 को नासिक में आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में कार्यकर्ता के सम्यक प्रबोधन हेतु बहुआयामी प्रकृति के सत्र नियोजित किये गये । प्रशिक्षण सत्रों के विविध प्रकारों में सैद्धांतिक स्पष्टता हेतु बौद्धिक वर्ग एवं चिंतन कणिका, कार्यपद्धति की जानकारी हेतु विभिन्न समूह तथा गट चर्चाएँ, व्यावहारिक प्रशिक्षण की दृष्टि से प्रात्यक्षिक सत्र आदि का समावेश था। शरीर और मन के स्वास्थ्य हेतु योग सत्र में भी प्रशिक्षार्थी सम्मिलित हुए। चर्चा सत्रों में संस्कार भारती के विभिन्न दायित्वों के लिए करणीय कर्तव्य पालन, प्रबंधन-प्रशिक्षण निमित्त विशद विषयों को सम्मिलित कर सामूहिक चिन्तन हुआ। आवास व चर्चा गटों का नामकरण श्रेष्ठ कला मनीषियों के नाम पर किया जाना तथा कला प्रदर्शनी का आयोजन स्वयं में एक प्रच्छन्न प्रशिक्षण था।

इस वर्ग में सभी ग्यारह क्षेत्रों से 270 अपेक्षित प्रतिभागियों में से 206 उपस्थित हुए। प्रशिक्षण वर्ग की कुल उपस्थिति 227 रही। नासिक महानगर एवं पश्चिम महाराष्ट्र प्रान्त के आत्मीय कार्यकर्ताओं के परिश्रम से संपन्न यह प्रशिक्षण वर्ग सभी प्रतिभागियों के लिए महत्वपूर्ण व स्मरणीय रहा ।

सिने टाकीज़

संस्कार भारती, सिने टाकीज़ उपक्रम को फिल्म जगत के शिक्षाविद, व्यावसायी, व अध्येताओं के मध्य शैक्षणिक संवाद हेतु प्रति दो वर्ष में आयोजित करती है। सिने टाकीज़, सिने जगत के पारम्परिक Film Festivals तथा पुरस्कार समारोह से भिन्न अपने अर्थपूर्ण संवाद के लिए प्रतिष्ठत है। सिने जगत में एक गंभीर चर्चा मंच की रिक्तता प्रतीत हुई थी जो इस उद्योग के हितैषीयों के मध्य स्वस्थ संवाद और विचारों के आदान प्रदान को बढ़ावा दे सके। सिने टाकीज़

ने इसी रिक्तता को विषय आधारित शैक्षणिक सम्मलेन के माध्यम से पूर्ण किया। त्रि-दिवसीय इस द्विवार्षिक संगोष्ठी 'सिने टाकीज़ 2024' का आयोजन 13 से 15 दिसंबर को मुंबई स्थित National Stock Exchange (NSE) परिसर में आयोजित किया गया। इस द्वितीय संस्करण का विषय 'Woods to Roots' था, जिसमे Bollywood, Tollywood, Kollywood आदि कृत्रिम शब्दावलियों को 'भारतीय सिनेमा' के रूप में प्रकटीकरण पर ज़ोर दिया गया। देश में कथा-कथानक जैसी समृद्ध परंपरा को विश्व तक पहुंचने की आवश्यकता पर चर्चा हुई। सिने टाकीज़ के इस संस्करण में 14 राज्यों के कुल 256 प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसमे भारतीय सिनेमा जगत के गणमान्य जन, सिने समीक्षक, शैक्षणिक संस्थानों के संकाय व अभ्यार्थी प्रमुख रहे। इसी तरह विभिन्न चर्चा सत्रों के विषय विशेषज्ञ सिने जगत के प्रतिष्ठित व्यक्ति, अभिनेता, निर्देशक, निर्माता, लेखक और सुप्रसिद्ध समीक्षक रहे जिन्होंने सत्र संचालन भी किया। ज्ञातव्य है की सन 2022 में आयोजित सिने टाकीज़ का प्रथम संस्करण आयोजित हुआ था, जिसका विषय था "Cinema and Bharatiya Freedom Struggle"

प्रांतों के प्रमुख कार्यक्रमों का वृत्त

छत्तीसगढ़ प्रांत

पूर्व प्रांत अध्यक्ष स्वर्गीय अशोक चंद्राकर स्मृति 'रंग संस्कार महोत्सव' इस वर्ष 16-17-18 मई 2025 को रायपुर में आयोजित किया गया। इस वर्ष समारोह में चार नाटकों की प्रस्तुतियां हुई। गत वर्ष से प्रारंभ हुए इस त्रिदिवसीय समारोह के उद्घाटन अवसर के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ी फिल्म के प्रसिद्ध कलाकार एवं विधायक पद्मश्री अनुज शर्मा थे। महोत्सव के प्रथम दिवस पर संस्कार भारती और दक्षिण मध्य क्षेत्र संस्कृतिक केंद्र नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर पर बनी चित्रमाला का उद्घाटन हुआ ।महोत्सव के समापन के मुख्य अतिथि मुंबई के प्रसिद्ध सिने कलाकार पद्मश्री मनोज जोशी थे ।समारोह के दौरान रायपुर के दो वरिष्ठ रंग साधकों को ''रंग संस्कार सम्मान''से विभूषित किया गया ।

कला धरोहर विभाग संस्कार भारती छत्तीसगढ़ के सदस्यों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में 'हेरिटेज वॉक'का आयोजन किया गया।

कोरबा जिले में आदिमानव के द्वारा उपयोग में ले जाने वाले विभिन्न प्रकार के चित्रित शैलाश्रयों की खोज की गई। इसकी विधिवत जानकारी संबंधित विभाग और जिला प्रशासन को दी गई।कला धरोहर विभाग द्वारा चिरंतन भाग -1 का प्रकाशन एवं विमोचन किया गया ।

दक्षिण कर्नाटक प्रांत

कर्नाटक दक्षिण प्रांत ''मातृशक्ति सम्मेलन''का आयोजन 26 सितंबर 2025 को बेंगलुरु के अमृता शिशुनिवास में किया गया, जिसका विषय 'भारतीय नारी – व्यक्ति एवं शक्ति' था। इस सम्मेलन का उद्देश्य भारतीय नारी की विविध भूमिकाओं और समाज में उनके योगदान को रेखांकित करने के साथ-साथ कार्यकर्त्रियों में संगठनात्मक समन्वय, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को सशक्त बनाना था। प्रथम सत्र में कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती अहल्या शर्मा ने 'भारतीय नारी – व्यक्तित्व एवं परंपरा' पर उद्बोधन दिया, तथा द्वितीय सत्र में अमरा सौंदर्य फाउंडेशन की संस्थापक श्रीमती निर्मला अमरनाथ ने 'भारतीय नारी – कर्तृत्व एवं परंपरा' पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में पद्मश्री डॉ. विजयलक्ष्मी देशमाने भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थीं, जिन्होंने महिलाओं को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया। इस सम्मेलन में 120 मातृशक्ति कार्यकर्त्रियों सहित प्रांत संयोजिका श्रीमती वेदा भट व अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दक्षिण जिला समिति द्वारा 28 दिसंबर 2024 को 'Divine Dimensions' कार्यक्रम के अंतर्गत एक कावी आर्ट कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला, डॉ. जनार्दन राव हावंजे की 18 से 29 दिसंबर 2024 तक आयोजित कला प्रदर्शनी के क्रम में संपन्न हुई।

काावी कला (Kaavi Art) दक्षिण कन्नड़, उडुपी और मंगलूरु जैसे तटीय क्षेत्रों की एक पारंपरिक व विशिष्ट कलाशैली है। इस कार्यशाला का उद्देश्य बेंगलुरु के कला-रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को इस दुर्लभ कला से परिचित कराना था। डॉ. जनार्दन राव हावंजे के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यशाला में लगभग 42 विद्यार्थियों ने इस विशिष्ट केसरिया (saffron) कला के मूल सिद्धांतों का अभ्यास किया।

दक्षिण बंगाल प्रांत

दक्षिण बंगाल प्रांत नाट्य जगत में सांस्कृतिक मार्क्सवाद की धारा के विरुद्ध प्रयास कर रहा है और 60 से अधिक नाट्य दलों को अपने साथ जोड़ चुका है। इन्हीं कलाकारों के आह्वान पर 22-23 नवंबर 2024 को पश्चिम बर्धमान में प्रथम 'नाट्याचार्य गिरीश घोष बंग नाट्यमेला' आयोजित किया गया। इस दो दिवसीय मेले में नाट्य प्रदर्शनी 'बंग नाटक में गिरीश घोष का योगदान' विषय पर संगोष्ठी तथा 'एकटी भालोबाशार गल्पो' नाटक का मंचन हुआ। साथ ही, बंगाल की प्रथम महिला राजबंदी ननीबाला देवी के जीवन पर आधारित नए नाटक 'केनो चेये आछो गो माँ' का पोस्टर भी जारी किया गया।

इसके अतिरिक्त, विकृत इतिहास और पश्चिमी सभ्यता के दबाव के मध्य, बंगाल के 'भूले-बिसरे नर्तेश्वर शिव' को नई पीढ़ी से परिचित कराने हेतु 'नर्तेश्वर चित्र प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। संस्कार भारती के दृश्यकला विभाग की इस पहल में 15

कलाकारों की कृतियाँ भारतीय संग्रहालय के प्रांगण में प्रदर्शित की गई। उद्घाटन समारोह में पूर्वांचल संस्कृति केंद्र के अधीक्षक डॉ. आशीष गिरि तथा भारतीय संग्रहालय के सह-अधीक्षक डॉ. सयन भट्टाचार्य सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

जम्मू-कश्मीर प्रांत

21-22 दिसंबर 2024 को, संस्कार भारती जम्मू कश्मीर ने 'द्वितीय लीड महोत्सव 2024' के संयुक्त तत्वावधान में साइंस कॉलेज, जम्मू में दो दिवसीय मेले और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें लद्दाख, कश्मीर और जम्मू के कलाकारों ने भाग लिया। संस्कार भारती के प्रयासों से जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी द्वारा कलाकारों को लाइट, साउंड और मानदेय हेतु लगभग 7 लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया गया। इस मेले में 22 से 25 हजार लोगों ने उपस्थिति दर्ज कराई। एक विशेष प्रस्तुति में बाबा जीतमल जी की जीवनी पर आधारित नाटक को काफी सराहा गया। इसके बाद 24 जनवरी 2025 को आल लद्दाख स्टूडेंट एसोसिएशन और संस्कार भारती ने अभिनव थियेटर में लद्दाख नववर्ष 'लौसर 2025' का स्वागत समारोह आयोजित किया। इसमें एम.एम. कॉलेज के विद्यार्थियों ने डोगरी, कश्मीरी और लद्दाखी नृत्य प्रस्तुत किए। संस्कार भारती से श्री अजय भारती ने 'कुटुम्ब प्रबोधन' विषय पर व्याख्यान दिया। अंत में 27 जुलाई 2025 को संस्कार भारती और बाबा बुढा अमरनाथ न्यास द्वारा अभिनव थियेटर में 'द्वितीय बाबा बुढ़ा

अमरनाथ स्वागत समारोह' आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा थे।इस अवसर पर संस्कार भारती द्वारा शिव भजन और राम भजन प्रस्तुत किए गए तथा 850 यात्रियों के पहले दल का स्वागत किया गया।

अवध प्रांत

अवध प्रांत ने 11 जून 2025 को लखनऊ के सिटी मॉन्टेसरी स्कूल प्रांगण में 'हमारा देश – हमारे राम' शीर्षक से एक भव्य सांस्कृतिक आयोजन किया। इसमें प्रख्यात कलाकार अभय सिंह 'निर्भीक' ने रामायण की कविताओं को संगीत के साथ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में वंदे मातरम् और 'ऑपरेशन सिंदूर' पर आधारित प्रस्तुतियों के माध्यम से देशभक्ति और रामभक्ति का संगम देखने को मिला। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक श्री कौशल जी मुख्य अतिथि थे तथा अध्यक्षता संस्कार भारती के राष्ट्रीय संरक्षक माननीय बांकेलाल गौर जी ने की। इसके अतिरिक्त 2-3 जून 2025 को ज्येष्ठ मंगल के अवसर पर हनुमत धाम मंदिर, लखनऊ में एक विशेष चित्रकला कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें दस विशिष्ट कलाकारों ने हनुमानजी के जीवन पर आधारित चित्र बनाए।

उत्तर बिहार प्रान्त

उत्तर बिहार के पश्चिम चंपारण में 10 अगस्त को 'भोजपुरिया कला जुटान' नामक एक अनूठा सांस्कृतिक आयोजन संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम भोजपुरी लोक संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियों पर केंद्रित था, जिसमें आज़ादी के आंदोलन के दौरान जनजागरण के लिए गाए जाने वाले लोकगीत प्रस्तुत किए गए। एक विशेष 'खादी भूषाचार' (फैशन शो) ने स्वदेशी चेतना को उजागर किया। साथ ही 'भोजपुरी संझा' में स्थानीय कलाकारों और प्रांत अध्यक्ष श्रीमती रंजना झा द्वारा प्रस्तुतियाँ दी गईं।

त्रिपुरा प्रान्त

त्रिपुरा के अगरतला में 01 जून 2025 को एक दिवसीय राज्य स्तरीय मणिपुरी नृत्य कार्यशाला एवं संगोष्ठी आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 150 विद्यार्थियों को विश्वभारती विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुमित बसु द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। डॉ. बसु ने मणिपुरी नृत्य, रवीन्द्रनाथ टैगोर और त्रिपुरा के गहरे संबंधों पर अपने विचार भी साझा किए।

आंध्र प्रदेश प्रान्त

आंध्र प्रदेश में, ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम साहित्यकार श्री विश्वनाथ सत्यनारायण जी की जयंती अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर राज्यभर में विविध साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनका मुख्य कार्यक्रम विजयवाड़ा में संपन्न हुआ। उनके साहित्यिक योगदान के सम्मान में, उनकी जयंती को 'तेलुगु साहित्य दिवस' के रूप में घोषित करने हेतु शासन स्तर पर विशेष प्रयास किए गए।

मालवा प्रान्त

इंदौर में 19 जनवरी 2025 को आयोजित मुख्य कार्यक्रम में श्री पियूष शर्मा और श्री सागर चौकसे ने संविधान में सनातन धर्म के महत्व और नागरिक कर्तव्यों पर प्रकाश डाला। इस दौरान बांग्लादेशी हिन्दुओं पर अत्याचार विषय पर एक चित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई।

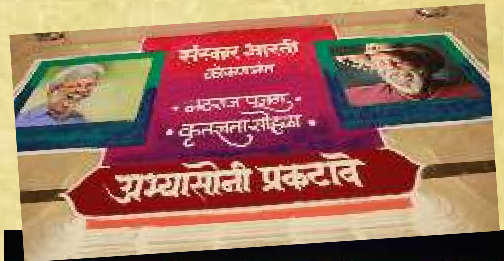

कोकण प्रान्त

03 अगस्त 2025 को 'अभ्यासोनी प्रकटावे' (अध्ययन कर के ही व्यक्त होना) कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम संस्कार भारती के दो पूर्व अध्यक्षों मा. राजदत्त जी (पद्मभूषण 2024) और मा. वासुदेव कामत जी (पद्मश्री 2025) के सम्मान में मुंबई

के रवींद्र नाट्य मंदिर में आयोजित किया गया। प्रमुख अतिथि सुप्रसिद्ध गायिका सुश्री उषा मंगेशकर जी ने दोनों कलासाधकों को सम्मानित किया। इस अवसर पर दोनों कलासाधकों के जीवन पर आधारित लघुचित्र दिखाए गए ।दोनों श्रेष्ठ कलासाधकों के साक्षात्कार इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था ।दोनों साधकों के कला जीवन और कार्यकर्ता जीवन के अनुभव सभी उपस्थित कला रसिकों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी रहें । इस कार्यक्रम में मराठी कला जगत के शीर्ष गणमान्य व्यक्ति बड़ी संख्या में उपस्थित रहें ।

गोवा प्रान्त

विद्या प्रबोधिनी कॉलेज, पणजी में 'साहित्य में राम' विषय पर एक राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित किया गया, जिसका मार्गदर्शन प्राचार्य डॉ. भूषण भावे ने किया। इस संगोष्ठी में गोवा के समाज कल्याण मंत्री श्री सुभाष फलदेसाई जी सहित देश के प्रख्यात विद्वानों जैसे प्रो. गौरी माहुलीकर, डॉ. श्रीकान्त बहुलकर और प्रो. रजनीश मिश्र ने भाग लिया। इसी प्रवास के दौरान गोवा प्रांत संस्कार भारती द्वारा एक 'साहित्य संवाद' कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें कोंकणी और मराठी के वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ समकालीन साहित्यिक बिंदुओं पर चर्चा हुई।

जयपुर प्रान्त

06 जुलाई 2025 को 'भारतीय कला दृष्टि एवं समसामयिक चुनौतियां' विषय पर एक कला वार्ता आयोजित की। इसमें मुख्य वक्ता राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. संजीव किशोर गौतम तथा राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ के अध्यक्ष डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा थे। वक्ताओं ने भारतीय सौंदर्य दर्शन, समसामयिक कला की चुनौतियों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे विषयों पर चर्चा करते हुए युवाओं को अपनी जड़ों की ओर लौटने का आह्वान किया।

इसके अतिरिक्त, 12 फरवरी 2025 को जवाहर कला केंद्र (जेकेके) के सहयोग से 'भरतमुनि नाट्य दिवस समारोह 2025' का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य युवा पीढ़ी को भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र से परिचित कराना था। तीन सत्रों में चले इस समारोह में विद्वानों द्वारा नाट्यशास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिए गए और 50 से अधिक युवा-नाट्य-साधकों ने भाग लिया। सायंकालीन सत्र में, दिल्ली की संस्था द्वारा महाकवि भास रचित संस्कृत नाटक "कर्णभारम" का छऊ नृत्य शैली में मंचन किया गया।

दक्षिण बिहार प्रान्त

दक्षिण बिहार के पटना स्थित सीमेज संस्थान में 18 सितंबर 2025 को ''फिल्म, प्रदर्श कला एवं सोशल मीडिया में भारतीय कला दृष्टि'' विषय पर कला वार्ता आयोजित की गई। मुख्य वक्ता संस्कार भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री अभिजीत गोखले जी ने कहा कि सोशल मीडिया भारतीय संस्कृति को विश्वभर में पहुँचा रहा है, किंतु विकृत सामग्री से सावधानी आवश्यक है।

मुंगेर में (जो कलाकार नंदलाल बोस की जन्मस्थली है) संविधान के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 'संविधान-75' शीर्षक से एक चित्रकला कार्यशाला एवं प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें 62 प्रतिभागियों ने भाग लिया और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

केरल प्रान्त

केरल के कोच्चि में 04 फरवरी 2025 को संस्कार भारती से संबद्ध 'तपस्या कला साहित्य वेदी' के 'स्वर्ण जयंती समारोह' का भव्य उद्घाटन पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी द्वारा किया गया।अपने संबोधन में डॉ. भागवत जी ने कहा कि भारत को विश्व के लिए एक आदर्श राष्ट्र बनना चाहिए और इस लक्ष्य में साहित्य एवं कला की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर प्रख्यात संगीतकार श्री ओसेपाच्चन सहित अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों एवं कलाकारों को सम्मानित किया गया।

विदर्भ प्रान्त

विदर्भ प्रांत ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 'संघ शताब्दी' के अवसर पर 01 से 03 अक्टूबर 2025 तक नागपुर के रेशिमबाग स्थित स्मृति भवन में एक "पोर्ट्रेट रंगोली प्रदर्शनी" 'संघदधीचि' का आयोजन किया। यह प्रदर्शनी राष्ट्रयज्ञ में सर्वस्व अर्पित करने वाले 101 दिवंगत संघ प्रचारकों एवं संघव्रती कार्यकर्ताओं की स्मृति में आयोजित की गई थी। विभिन्न क्षेत्रों से आए 80 अनुभवी और नवोदित कलाकारों ने मिलकर 40 घंटे में 101 संघव्रतियों के पोर्ट्रेट रंगोली चित्र साकार किए। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के करकमलों से हुआ। उन्होंने इसे एक 'प्रेरणादायक, पवित्र और भावपूर्ण प्रयास' बताते हुए कहा कि कला का उद्देश्य संस्कार करना है। इस प्रदर्शनी को लगभग 2000 दर्शकों ने देखा।

तेलंगाना प्रान्त

प्रज्ञा प्रवाह द्वारा भाग्यनगर में 21 से 24 नवम्बर 2024 के मध्य आयोजित लोकमंथन में पूरे भारत से लगभग 1800 कलाकारों ने भाग लिया। इस अवसर पर लगभग 400 से अधिक मंचीय प्रस्तुतियां संपन्न हुई। तेलंगाना के 400 तथा छत्तीसगढ़ के 50 लोक संगीत वाद्ययंत्र प्रदर्शित किए गए। सभी प्रतिभागियों के लिए 100 कला प्रकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले 'कला कल्पवृक्ष' पुस्तक का वितरण किया गया। संस्कार भारती तेलंगाना द्वारा मा. श्री दत्तोपंत जी लिखित "हिंदू कला दृष्टी" पुस्तक के तेलुगु अनुवाद का लोकार्पण पूजनीय सरसंघचालक श्री मोहन भागवत जी द्वारा किया गया। यह एक सांस्कृतिक कुंभमेला की तरह है। भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, कथक, ओडिसी जैसे शास्त्रीय नृत्य तथा मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक के कलाकारों ने अपने राज्य के लोकनृत्य प्रस्तुत किए। छत्तीसगढ़ का रामनामी समूह भी इन प्रस्तुतियों में सम्मिलित हुआ।

यह सर्वविदित है कि हमारी, अर्थात् संस्कार भारती की पहचान, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत देश के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित है। यह विशालता केवल हमारी संख्या या भौगोलिक विस्तार का परिचायक नहीं है, अपितु यह उस गुरुतर दायित्व का भी बोध कराती है, जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु हमारे कंधों पर है।

हमारे समस्त कार्यों का मेरुदंड और हमारी वैचारिक प्रेरणा का मूल आधार यह संकल्प है कि 'भारतीय कला दृष्टि के आधार पर ही कला जगत का संचालन हो'। संस्कार भारती केवल एक गतिविधि-संचालित संस्था नहीं, अपितु एक वैचारिक संगठन है, जिसका सुनिश्चित कार्यक्षेत्र कला एवं संस्कृति है।हम कला को केवल मनोरंजन या प्रदर्शन का माध्यम मात्र नहीं मानते; हमारे लिए कला, चेतना के उन्नयन और राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना का एक सशक्त माध्यम है।

भारत जैसा वैविध्यपूर्ण राष्ट्र, जहाँ भाषा, वेशभूषा, पंथ और परंपराओं की अनगिनत धाराएँ हैं, उसे एक अखंड सूत्र में पिरोने का सबसे प्रभावी कार्य हमारी कला और संस्कृति ही करती है। यह हमारी सांस्कृतिक एकात्मता ही है, जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक भावनात्मक एकता को जीवंत रखती है। इसीलिए हमारा यह परम दायित्व बन जाता है कि युगों-युगों से चला आ रहा यह सनातन सांस्कृतिक प्रवाह अविरल एवं अक्षुण्ण बना रहे।इस प्रवाह को न केवल जीवित रखना, बल्कि उसे समयानुकूल गतिशीलता प्रदान करना भी हमारा उद्देश्य है।

अब हमारा यह सामूहिक कर्तव्य है कि हम अपने संगठन के विस्तार के साथ-साथ, संगठन के मूल विचार

(वैचारिकता) एवं गुणवत्ता पर भी विशेष और केंद्रित ध्यान दें। संगठनात्मक विस्तार आवश्यक है, किंतु यह विस्तार वैचारिक स्पष्टता और गुणात्मक उत्कृष्टता के बिना निरर्थक है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि संगठन का प्रत्येक नया आयाम और प्रत्येक नया कार्यकर्ता हमारी मूल दृष्टि से गहराई से जुड़ा हो। भविष्य की योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए, हमें 'देश-काल-परिस्थिति' को ध्यान में रखते हुए 'युगानुकूल' बने रहना होगा। इसका अर्थ है कि हम अपनी शाश्वत जड़ों से पोषण प्राप्त करते हुए भी, वर्तमान युग की चुनौतियों और आवश्यकताओं के प्रति सजग रहें।

हमें आधुनिक तकनीकों और नवीन विधाओं को अपनाना होगा, ताकि हम अपनी युवा पीढ़ी तक भारतीय कला दृष्टि के अमृत को प्रभावी ढंग से पहुँचा सकें। हम अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने में तभी सफल रहेंगे, जब हम परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक रचनात्मक संतुलन स्थापित कर पाएँगे।

मैं आशा और कामना करता हूँ कि हम अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल रहेंगे। हमारा मार्गदर्शक सिद्धांत 'इदं न मम, राष्ट्राय स्वाहा' का भाव है। जब हम इस निःस्वार्थ भावना से, अर्थात 'यह मेरा नहीं, अपितु राष्ट्र को समर्पित है', संस्कृति की सेवा में संलग्न होते हैं, तो ईश्वर भी हम सबके साथ होता है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इस सांस्कृतिक यज्ञ में हम सभी की समिधा स्वीकार हो।

धन्यवाद

डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति
नागपुर